

45 306
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi

1283
1/21

आह्वानांक Call No. _____

अवाप्ति सं० Acc. No. _____

306

1

48

11

AD No. 046 1/5/30

भारत पिकेटिंग भजन

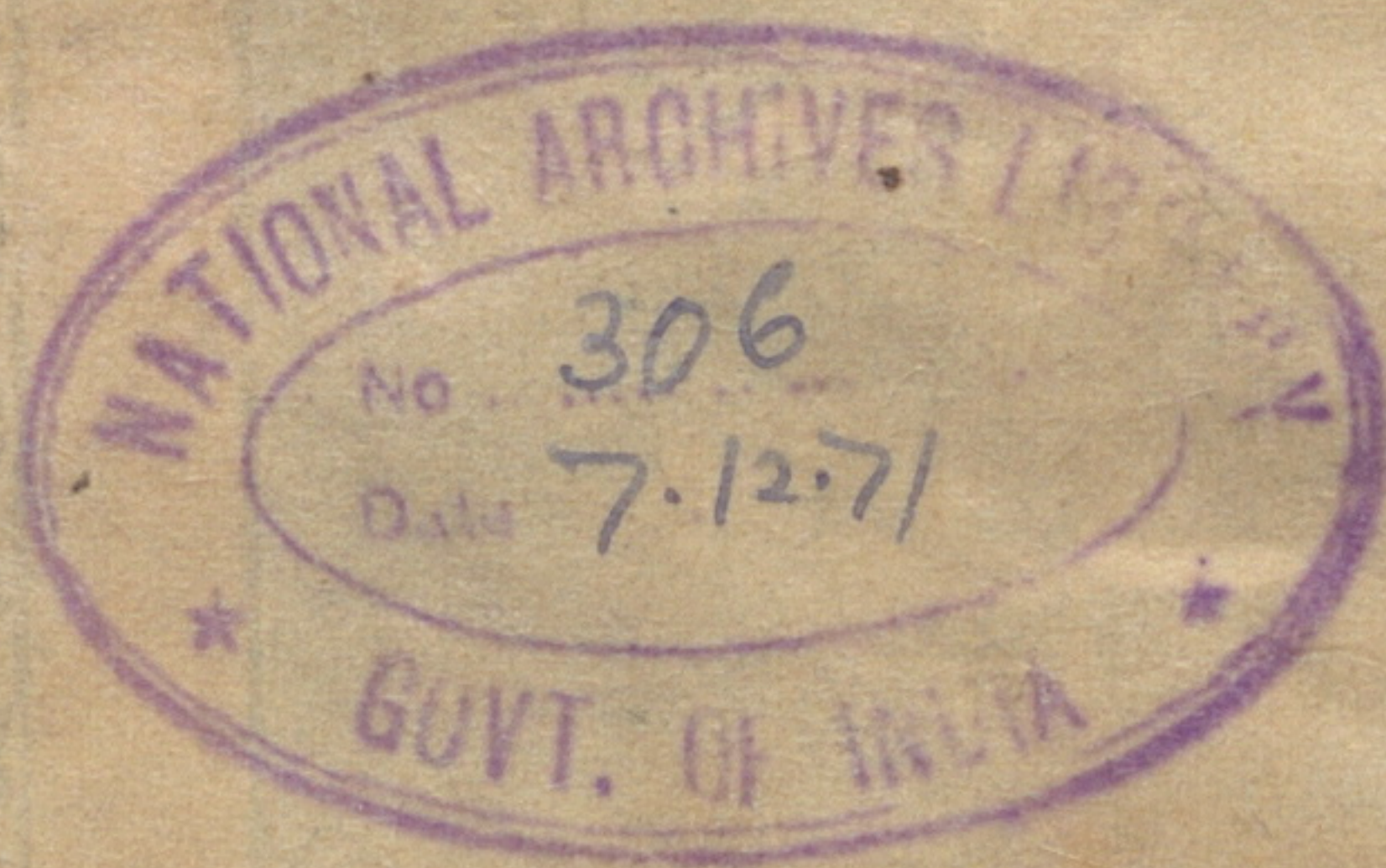
लेखक-मारकण्डे शायर शिवालाघाट बनारस ।



प्रकाशक—मेवालाल एण्ड को०कचौड़ी गली बनारस
मूल्य १)

PL-221

891. 931
59 99 B



भारत पिक्केटिंग भजन ।

कौवाली ॥ १ ॥

भारत क्यों करते बरबाद ताड़ी शराब पीने
वाले । मुश्किल से जो दाम कमाते, उसको क्यों
बेकार उड़ाते । क्यों नहीं बाल बच्चोंमें खाते, ताड़ी
शराब पीने वाले ॥ १ ॥ इसी पैसों के कारन यार
बनो दुसरोँका ताबेदार । जरा दिलमें तो करो विचार
ताड़ी शराब पीने वाले ॥ २ ॥ बुरी सौ ताड़ी और
शराब, नसों में सूझे कर्म खराब । बको गाली नहीं
सर्म हेजाव, ताड़ी शराब पीने वाले ॥ ३ ॥ सरे में
मारकंडे ललकार, कहें मानो जी बात हमार । जरा
भारत तो लेउ उबार, ताड़ी शराब पीने वाले ॥ ४ ॥

गजल ॥ २ ॥

जो करतेहो मुझपर सितम देख लेना ।
अलमका नतीजा अलम देख लेना ॥
लगे वा मुकाबिल अगर गन मसीने ।

अड़ा दें छाती को हम देख लेना ॥

अजी भूमि भारत के खातिर मरेंगे ।

हटेगा नपीछे कदम देख लेना ॥ २ ॥

रहे मांग स्वधीनता का बराबर ।

मेरे जबसे है दममें दम देख लेना ॥ ३ ॥

ठनी जो है दिल में ठनेही रहेगी ।

अगर जाय मुल्के अदम देखलेना ॥ ४ ॥

अहिंसा न छोड़ेंगे ऐ मारकंडे ।

मुभेतो हैं गंगा कसम देख लेना ॥ ५ ॥

गजल ॥ ३ ॥

जालिम तेरा दिल सहके सितम शाद करेंगे ।

भारत को अपने हाथ से आबाद करेंगे ॥

तेतिस करोड़ भाई मेरे अहले हिन्द में ।

देदो स्वराज हिन्द का फरियाद करेंगे ॥ १ ॥

गरचे शदा के साथही छुटे मशीन गन ।

तो मर मिटेंगे हम न कुछ फसाद करेंगे ॥ २ ॥

होता है बुरा जुल्मी सितम का जी नतीजा ।
 मालिक मेरा भगवान जो बेदाद करेंगे ॥ ३ ॥
 सह सह सितम उफ न जरा मुह से लायेग ।
 मजबूत अपने हिन्द का बुनियाद करेंगे ॥ ४ ॥
 ऐ मारकंडे धन से इलम से जो हीन है ।
 वनके मूरीदो गांधी को उस्ताद करेंगे ॥ ५ ॥

गजल ॥ ४ ॥

देखना है किस कदर दम खंजरे कातिल में है ।
 अब भी यह अरमान, यह हसरत, दिले बिस्मिल
 में है ॥ गैर के आगे न पूछो, इसमें है इक खास
 राज । फिर बता देंगे तुम्हें जो कुछ हमारे दिल में
 हैं ॥ खींचकर लाई है सबको कत्ल होनेकी उमीद
 आशिकों का आज जमघट कूचए कातिल में है ॥
 फिरते हो क्यों हाथ में चारों तरफ खंजर लिए ।
 आज है यह क्या इशारा आज यह क्या दिलमें है ॥
 एक से करता नहीं क्यों दूसरा कुछ बात चीत ।

देखता हूँ मैं जिसे वह चुप तेरी महफिल में है ॥
 उसपर आफन आयगी, इस रोज मर ही जायगा ।
 वह तो दुनियां में नहीं जो कूचए कातिल में है ॥
 एक जानिब है मसीहा एक जानिब है कजा ।
 किस कशाकश मे पड़ी है जान किस मुशकिलमें ह
 जख्म खाकर भी उसे है जख्म खाने की हवस ।
 हौसला कितना तड़पने का तेरे बिस्मलमें है ॥

गजल ॥ ५ ॥

सितमगर की हस्ती मिटानी पड़ेगी ।
 हमें अपनी करके दिखानी पड़ेगी ॥
 कभी उफ् न लायेगें अपनी जुबां पर ।
 मुसीबत सभी कुछ उठानी पड़ेगी ॥
 बहुतहो चुका अब सहें हम कहां तक ।
 ये बेइमानी सारी हटानी पड़ेगी ॥
 विदेशी बसन औ नशे की जिनिस पर ।
 हमें अब पिकेटिंग करानी पड़ेगी ॥

नमक को बनाकर औ कर बंद करके ।
 आजादी की भंडी उड़ानी पड़ेगी ॥
 करेंगे हम आजाद भारत को अपने ।
 विदेशी हुकूमत मिटानी पड़ेगी ॥

गजल ॥ ६ ॥

ये हम भी कभी जांबाज वतन ऐ चरख । हमें
 बरबाद न कर । जिंदा हैं मगर यह जीस्त नहीं
 अब और सितम ईजाद न कर ॥ जर और जवाहर
 सारा लुटा सब शान गई नादार बने । फैशन पै
 लुटाते मुल्क का जर नाशाद को क्यों तू शाद न
 कर ॥ जब गांधीजी ने जोर दिया जेलों के उधर
 दरवाजे खुले । हम आहो बुका से काम जो लें
 देते हैं डपट फरयाद न कर ॥ गोलमेज का तोफा
 दिया जो हमें नादान खुशी से उछलने लगे ।
 क्या जाल बिछाया हिकमत का बातों में फकत
 आजाद न कर ॥ कांग्रेस ने जो देखा रंग बुरा,

दिया डंक बजा आजादी का । हे कृष्णसुरारी कर
तू मदद, मजलूम को अब बेदाद न कर ॥

गजल ॥ ७ ॥

भारत में डंका आजादी बजवा दिया गान्धी
बाबा ने । सत्याग्रह भण्डा दुनियां में फहरा दिया
गान्धी बाबा ने ॥ १ ॥ सर पर गठरी थी गुलामी
की अति दूर थी हमसे आजादी । बनकर प्रहलाद
हमें सत् पथ दिखला दिया गांधी बाबा ने ॥ २ ॥
घुस गये विदेशी घर में थे सब माल लूट कर ले
जाते । सद शुक हाथ सोतोंका पकड़ बिठला दिया
गान्धी बाबा ने ॥ ३ ॥ सत्तर करोड़ धन जाता था
प्रति वर्ष विदेशी कपड़ों से तब मंत्र विदेशी
बहिष्कार सिखला दिया गान्धी बाबा ने ॥ ४ ॥ दे
ज्ञान हमें चरखे का पुनि खहरका बाना पहना कर ।
दिल मोरे चमड़े वालों का दहला दिया गान्धी
बाबा ने ॥ ५ ॥ निश्चयहिं दिवाला निकलेगा मेन्च

स्टर लंका शाय का । गर उस पथपर हम चलें
सभी जो बता दिया गान्धी बाबा ने ॥ ६ ॥ दूठा
कानून नमक का ज्यों योंहीं प्रसिद्ध सब दूटेंगे ।
है भद्र अवज्ञा का पथ अब दर्शा दिया गान्धी बाबा
ने ॥ ७ ॥ सत्याग्रह करके नवयुवको भारत मां को
आजाद करो । बस यही विजय का मार्ग हमें
बतला दिया गान्धी बाबा ने ॥ ८ ॥

गजल ॥ ८ ॥

भारत ! मैं तेरे नाम का डंका बजाऊंगा ।
संसार का सिर मोर तुझे फिर बनाऊंगा ॥
रहने न दूंगा मां की गुलामी की बेड़ियां ।
आजाद बनाऊंगा तभी चैन पाऊंगा ॥
जालिम पुलिस गर हमपै चलाएगी लाठियां ।
तो शौक से मैं सामने सीना अड़ाऊंगा ॥
हिंसा को स्वप्न में भी न लाऊंगा हृदय में ।
खंजरसे सितमगर के मैं बोटी कटाऊंगा ॥

बौछार गोलियों की या तेगों की मार हो ।
 माता के लिये शीश में अपना चड़ाऊंगा ॥
 घर-घर में चला चर्खा बना करके सूत को ।
 लाखों-करोड़ों थान में खादी बनाऊंगा ॥
 कपड़े विदेशी मुल्क में बिकने न दूंगा मैं ।
 खादी से देश-भाइयों के तन सजाऊंगा ॥
 गांजे, शराब ताड़ियों की जा दुकानों पर ।
 कर जोड़ भाइयों से नशों को छुड़ाऊंगा ॥
 अब तक जो लुटा मालोजर वह कहै कुछ नहीं
 लुटने न दूंगा देश की दौलत बचाऊंगा ॥
 ऐ "भीम" न कर सोच ये मोहन ने कहा है
 "स्वाधीन मातृभूमि में अपनी बनाऊंगा" ॥

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता-

मेवालाल एण्ड को०

कचौड़ीगली बनारस सिटी ।

"श्रीबागेश्वरी प्रेस" दारानगर, बनारस सिटी में मुद्रित ।

छपगई !

नई नई पुस्तकें !!

छपगई !!!

सुनहरी मौका न विसारिये ! आईये और खरीदिये !! अवश्य खरीदिये!!!

सावन सती उर्फ पढ़ने का शार ॥)	स्त्री शिक्षक	॥८)
सावन की सौगात	॥ नारी शिक्षा दर्पण	॥)
प्रेमकान्ता उपन्यास	५) प्रेमकान्ता सन्तति	५)
कमल कुमारी	२) जहरीली कलम	१)
सावनस्वदेश उर्फ गौ पुकार	॥ स्त्री गीत बहार	८)॥
सावन का सरदार	॥ सावन सन्देश	॥
नारी धर्म उपन्यास	॥ तिलिस्मीतहखाना उर्फ	
सावन का सहायक उर्फ मेला	कुमारीमधुवंसरी पहिला	
धुमनी बेटी बेचवा की कजरी ॥)	खण्ड	॥)
सावन का सखा उर्फ महगी	कुअर-कान्ता चारोभाग ॥)	
का हाल	॥ भारत दुर्दशा नाटक ॥)	
बड़ीकजरीसावनसितारेहिन्द ॥)	पृथ्वीराज नाटक	॥)
सावन का शहीद उर्फ भद्रानन्द	इकीकतराय नाटक	॥)
का हाल	॥ रामलीला नाटक ॥)	
सावन की शुद्धी	॥ विदेशिया नाटक ॥)	
सावन संगी	॥ कवित बजरंगविजय	॥)
नई कजरी दुनमुनिया	॥ कवितकुअबहार	॥)
सावन राजा	॥ सवैया शतक	॥)
सावन स्वराज	॥ श्रीमतीमंजरीनाटक	॥)
सावन सत्याग्रह	॥ सतीअनसूइया	॥)
सावन स्वदेशभारत	॥ अमृत उपदेश	॥)
भारतपेकेटिङ्ग-भजन	॥ जादू उर्फ नजर बंद	॥)

विशेष हाल जाननेके लिये हमारा बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मेंगा कर देखिये पता—

मिलने का पता—मेवालाल एण्ड को० बनारस ।

सिर्फ टाइपिल—अर्जुनप्रेस, बनारस में छपा ।